

रविवार 19 अक्टूबर, 2025

विषय — प्रायश्चित का सिद्धांत

स्वर्ण पाठ: प्रेरितों के काम 17: 28

" क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं। "

उत्तरदायी अध्ययन: रोमियो 6: 12-18

- 12 इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उस की लालसाओं के आधीन रहो।
- 13 और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आप को मरे हुएों में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।
- 14 और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हो॥
- 15 तो क्या हुआ क्या हम इसलिये पाप करें, कि हम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हैं? कदापि नहीं।
- 16 क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाई सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है
- 17 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे।
- 18 और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 32: 1, 2

- 1 क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढाँपा गया हो।
- 2 क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले, और जिसकी आत्मा में कपट न हो॥

2. भजन संहिता 85: 7-13

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 7 हे यहोवा अपनी करूणा हमें दिखा, और तू हमारा उद्धार कर॥
8 मैं कान लगाए रहूंगा, कि ईश्वर यहोवा क्या कहता है, वह तो अपनी प्रजा से जो उसके भक्त है, शान्ति की बातें कहेगा; परन्तु वे फिर के मूर्खता न करने लगे।
9 निश्चय उसके डरवैयों के उद्धार का समय निकट है, तब हमारे देश में महिमा का निवास होगा॥
10 करूणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं; धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है।
11 पृथ्वी में से सच्चाई उगती और स्वर्ग से धर्म झुकता है।
12 फिर यहोवा उत्तम पदार्थ देगा, और हमारी भूमि अपनी उपज देगी।
13 धर्म उसके आगे आगे चलेगा, और उसके पांवों के चिन्हों को हमारे लिये मार्ग बनाएगा॥

3. मत्ती 8: 18

- 18 यीशु ने अपनी चारों ओर एक बड़ी भीड़ देखकर उस पार जाने की आज्ञा दी।

4. मत्ती 9: 1-8

- 1 फिर वह नाव पर चढ़कर पार गया; और अपने नगर में आया।
2 और देखो, कई लोग एक झोले के मारे हुए को खाट पर रखकर उसके पास लाए; यीशु ने उन का विश्वास देखकर, उस झोले के मारे हुए से कहा; हे पुत्र, ढाढ़स बान्ध; तेरे पाप क्षमा हुए।
3 और देखो, कई शास्त्रियों ने सोचा, कि यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।
4 यीशु ने उन के मन की बातें मालूम करके कहा, कि तुम लोग अपने अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो?
5 सहज क्या है, यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए; या यह कहना कि उठ और चल फिर।
6 परन्तु इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने झोले के मारे हुए से कहा) उठ: अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।
7 वह उठकर अपने घर चला गया।
8 लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है॥

5. लूका 7: 36-48, 50

- 36 और किसी फरीसी ने उस से बिनती की, कि मेरे साथ भोजन कर; सो वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा।
37 और देखो, उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई।
38 और उसके पांवों के पास, पीछे खड़ी होकर, रोती हुई, उसके पांवों को आंसुओं से भिगाने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी और उसके पांव बारबार चूमकर उन पर इत्र मला।
39 यह देखकर, वह फरीसी जिस ने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान लेता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है? क्योंकि वह तो पापिनी है।

- 40 यह सुन यीशु ने उसके उत्तर में कहा; कि हे शमौन मुझे तुझ से कुछ कहना है वह बोला, हे गुरु कह।
41 किसी महाजन के दो देनदार थे, एक पांच सौ, और दूसरा पचास दीनार धारता था।
42 जब कि उन के पास पटाने को कुछ न रहा, तो उस ने दोनों को क्षमा कर दिया: सो उन में से कौन उस से अधिक प्रेम रखेगा।
43 शमौन ने उत्तर दिया, मेरी समझ में वह, जिस का उस ने अधिक छोड़ दिया: उस ने उस से कहा, तू ने ठीक विचार किया है।
44 और उस स्त्री की ओर फिरकर उस ने शमौन से कहा; क्या तू इस स्त्री को देखता है मैं तेरे घर में आया परन्तु तू ने मेरे पांव धाने के लिये पानी न दिया, पर इस ने मेरे पांव आंसुओं से भिगाए, और अपने बालों से पोंछा!
45 तू ने मुझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूं तब से इस ने मेरे पांवों का चूमना न छोड़ा।
46 तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला; पर इस ने मेरे पांवों पर इत्र मला है।
47 इसलिये मैं तुझ से कहता हूं; कि इस के पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इस ने बहुत प्रेम किया; पर जिस का थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।
48 और उस ने स्त्री से कहा, तेरे पाप क्षमा हुए।
50 पर उस ने स्त्री से कहा, तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा॥

6. यूहन्ना 14: 8-13

- 8 फिलेप्पुस ने उस से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिये बहुत है।
9 यीशु ने उस से कहा; हे फिलेप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है: तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा।
10 क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।
11 मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।
12 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।
13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।

7. रोमियो 5:1, 2, 8-11

- 1 सोजब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।
2 जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।
8 परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।
9 सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे?

- ¹⁰ क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?
- ¹¹ और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर के विषय में घमण्ड भी करते हैं॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 18: 1-9, 13-14 (से;)

प्रायश्चित परमेश्वर के साथ मनुष्य की एकता का उदाहरण है, जिससे मनुष्य ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम को दर्शाता है। नासरत के यीशु ने पिता के साथ मनुष्य की एकता को सिखाया और प्रदर्शित किया, और इसके लिए हम उसे अंतहीन श्रद्धांजलि देते हैं। उनका मिशन व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों था। उन्होंने जीवन का काम न केवल स्वयं के प्रति न्याय में, बल्कि मनुष्यों पर दया करने में भी किया — उन्हें यह दिखाने के लिए कि उन्हें अपना काम कैसे करना है, लेकिन यह उनके लिए नहीं करना है और न ही उन्हें किसी भी जिम्मेदारी से मुक्त करना है।

मसीह का प्रायश्चित मनुष्य को परमेश्वर से मिलाता है, परमेश्वर को मनुष्य से नहीं;

2. 19: 12-28

गुरु ने पूरा सच बोलने से परहेज किया, तथा स्पष्ट रूप से बताया कि बीमारी, पाप और मृत्यु को क्या नष्ट करेगा, यद्यपि उनके उपदेश ने घरों में मतभेद उत्पन्न कर दिया, तथा भौतिक विश्वासों में शांति नहीं, बल्कि तलवार आ गई।

पश्चाताप और पीड़ा के हर दर्द, सुधार के लिए हर प्रयास, हर अच्छा विचार और काम, हमें पाप के लिए यीशु के प्रायश्चित को समझने और उसकी प्रभावकारिता की सहायता करने में मदद करेगा; लेकिन अगर पापी प्रार्थना और पश्चाताप करना, पाप करना और क्षमा करना जारी रखता है, तो उसके पास प्रायश्चित में बहुत कम हिस्सा है, — परमेश्वर के साथ एकता में, - क्योंकि उसके पास व्यावहारिक पश्चाताप का अभाव है, जो हृदय को सुधारता है और मनुष्य को ज्ञान की इच्छा करने में सक्षम बनाता है। जो लोग प्रदर्शन नहीं कर सकते, कम से कम भाग में, हमारे गुरु की शिक्षाओं और अभ्यास के दिव्य सिद्धांत का भगवान में कोई हिस्सा नहीं है। यदि उसके प्रति अवज्ञा में रहते हैं, तो हमें कोई सुरक्षा महसूस नहीं करनी चाहिए, हालांकि भगवान अच्छा है।

3. 22: 20-27, 30 (न्याय)-31

प्रेम हमें प्रलोभन देने के लिए जल्दी में नहीं है, क्योंकि प्रेम का अर्थ है कि हमें कोशिश और शुद्ध करना होगा।

त्रुटि से अंतिम उद्धार, जिससे हम अमरता, असीम स्वतंत्रता और पापहीन भावना में आनंदित होते हैं, फूलों के रास्तों से नहीं पहुँचा जा सकता है और न ही किसी के विश्वास के बिना किसी दूसरे के काम के प्रयासों पर विश्वास

करके। जो कोई भी यह मानता है कि क्रोध धर्म है या वह देवत्व मानवीय पीड़ाओं से प्रभावित है, वह परमेश्वर को नहीं समझता।

न्याय के लिए पापी के सुधार की आवश्यकता है दया ऋण को तभी रद्द करती है जब न्याय स्वीकृत होता है।

4. 23: 1-11

हमें पाप से बचाने के लिए बुद्धि और प्रेम के लिए स्वयं के कई बलिदानों की आवश्यकता हो सकती है। एक बलिदान, हालांकि, महान, पाप के ऋण का भुगतान करने के लिए अपर्याप्त है। प्रायश्चित के लिए पापी की ओर से निरंतर आत्म-विसर्जन की आवश्यकता होती है। भगवान के क्रोध को उनके प्यारे पुत्र पर व्रत किया जाना चाहिए, जो दिव्य अप्राकृतिक है। ऐसा सिद्धांत मानव निर्मित है। प्रायश्चित धर्मशास्त्र में एक कठिन समस्या है, लेकिन इसकी वैज्ञानिक व्याख्या है, कि दुख पाप भावना की त्रुटि है जिसे सत्य नष्ट कर देता है, और अंततः पाप और पीड़ा दोनों ही अनन्त प्रेम के चरणों में गिर जाएंगे।

5. 24: 20-22

क्या विद्वान धर्मशास्त्र यीशु के सूली पर चढ़ने को मुख्य रूप से उन सभी पापियों के लिए तत्काल क्षमा प्रदान करने के रूप में मानता है जो इसकी मांग करते हैं और क्षमा पाने के इच्छुक हैं?

6. 5: 22-25

प्रार्थना को पाप को रद्द करने के लिए स्वीकारोक्ति के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना है। इस तरह की त्रुटि सच्चे धर्म को बाधित करेगी। पाप को क्षमा कर दिया जाता है क्योंकि यह मसीह, सत्य और जीवन द्वारा

7. 327: 1-7

सुधार यह समझने से होता है कि बुराई में कोई खुशी नहीं है, और विज्ञान के अनुसार अच्छे के लिए स्नेह प्राप्त करने से भी, जो अमर तथ्य को उजागर करता है कि न तो खुशी और न ही दर्द, भूख और न ही जुनून, या बात में मौजूद हो सकता है, जबकि दिव्य मन आनंद और पीड़ा, या भय और मानव मन के सभी पापी भूखों की झूठी मान्यताओं को नष्ट कर सकता है।

8. 362: 1-12

यह लुका के सुसमाचार के सातवें अध्याय से संबंधित है कि यीशु एक बार एक फरीसी के सम्मानित अतिथि थे, जिसका नाम साइमन था, हालांकि वह साइमन शिष्य के बिल्कुल विपरीत था। जब वे भोजन पर थे, तो एक असामान्य घटना हुई, जैसे कि पूर्वी उत्सव का दृश्य बाधित होता है। एक "अनजान महिला" अंदर आई। इस तथ्य की परवाह किए बिना कि उसे ऐसे स्थान और ऐसे समाज से, विशेष रूप से रब्बी कानून के कठोर

नियमों के तहत, वंचित किया गया था, मानो वह एक उच्च जाति के ब्राह्मण के घर में घुसपैठ करने वाली एक हिंदू बहिष्कृत महिला हो, यह महिला (मैरी मैग्डलीन, जैसा कि उसे बाद में कहा गया) यीशु के पास गई।

9. 363: 8 (क्या यीशु ने)-7

क्या यीशु ने औरत को अपमान के साथ देखा था? क्या उसने अपने आराध्य को ठुकरा दिया? नहीं! उसने उसे करुणापूर्ण माना। और न ही यह सब था। यह जानकर कि उनके आस-पास के लोग उनके दिल में क्या कहते थे, खासकर उनके मेजबान, — वे सोच रहे थे कि नबी होने के नाते, अति विशिष्ट अतिथि ने एक बार महिला की अनैतिक स्थिति का पता नहीं लगाया और उसे विदा नहीं किया, — यह जानकर, यीशु ने उन्हें एक छोटी कहानी या दृष्टांत के साथ फटकार लगाई। उन्होंने दो देनदारों का वर्णन किया, एक बड़ी राशि के लिए और एक छोटे के लिए, जिन्हें उनके सामान्य लेनदार द्वारा उनके दायित्वों से मुक्त कर दिया गया था। "उनमें से कौन उसे अधिक प्यार करेगा?" यह शमौन फरीसी के लिए मास्टर का प्रश्न था; और साइमन ने उत्तर दिया, "वह जिसे उसने अधिक माफ कर दिया।" यीशु ने जवाब स्वीकार किया, और इसलिए सभी को सबक सिखाया, जिसके बाद महिला के लिए यह उल्लेखनीय घोषणा के साथ, "तेरे पाप क्षमा हुए।"

इस प्रकार उसने अपने कर्ज को दिव्य प्रेम के लिए क्यों माफ़ किया? यदि उसने पश्चाताप किया और सुधार किया, और क्या उसकी अंतर्दृष्टि ने इस अनिर्दिष्ट नैतिक विद्रोह का पता लगाया? तेल से अभिषेक करने से पहले उसने अपने आंसुओं से अपने पैरों को नहाया। अन्य प्रमाणों की अनुपस्थिति में, उसके दुःख को उसके पश्चाताप, सुधार और ज्ञान में वृद्धि की अपेक्षा को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त सबूत थे? निश्चित रूप से इस तथ्य में प्रोत्साहन था कि वह निस्संदेह अच्छाई और पवित्रता के व्यक्ति के लिए अपना स्नेह दिखा रही थी, जो तब से सबसे अच्छा आदमी माना जाता है जो कभी इस ग्रह पर था। उनकी श्रद्धा शुद्ध थी, और यह उस व्यक्ति के प्रति प्रकट हुआ जो जल्द ही, सभी पापियों की ओर से अपने नश्वर अस्तित्व को समाप्त करने के लिए था, हालांकि वे यह नहीं जानते थे, उनके वचन और कार्यों के माध्यम से उन्हें कामुकता और पाप से मुक्त किया जा सकता है।

10. 497: 13 (हम)-19

हम यीशु के प्रायश्चित को ईश्वरीय, प्रभावशाली प्रेम के प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं, मसीह यीशु के माध्यम से परमेश्वर के साथ मनुष्य की एकता को प्रकट करते हैं; और हम स्वीकार करते हैं कि मनुष्य मसीह के माध्यम से सत्य, जीवन और प्रेम के माध्यम से बचाया जाता है जैसा कि गैलीलियन पैगंबर ने बीमारों को चंगा करने और पाप और मृत्यु पर काबू पाने में दिखाया था।

11. 21: 1-5

यदि सत्य आपके दैनिक चलने और वार्तालाप में त्रुटि पर काबू पा रहा है, तो आप अंततः कह सकते हैं, "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ मैं ने विश्वास की रखवाली की है।" क्योंकि आप एक बेहतर इंसान हैं। यह सत्य और प्रेम के साथ एक-में-भाग में हमारा हिस्सा है। ईसाई, श्रम और प्रार्थना करना जारी नहीं रखते हैं, क्योंकि दूसरे की भलाई, पीड़ा और जीत की उम्मीद है, कि वे उसके सद्भाव और इनाम तक पहुंचेंगे।

12. 568: 24-30

एक पाप पर जीत के लिए, हम धन्यवाद देते हैं और मेजबानों के भगवान की महिमा करते हैं। सभी पापों पर शक्तिशाली विजय के बारे में हम क्या कहें? एक ऊँचा गीत, जो पहले से कहीं अधिक मधुर उच्च स्वर्ग तक पहुँच गया है, अब अधिक स्पष्ट और मसीह के महान हृदय के निकट आता है; क्योंकि दोष लगाने वाला वहाँ नहीं है, और प्रेम उसके आदिम और चिरस्थायी तनाव को दूर करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6